IJAER/March-April 2021 /Volume-10/Issue 5 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

यज्ञ एवं पर्यावरण– एक समीक्षात्मक अनुशीलन

पूजा शर्मा
शोधार्थी
संस्कृत विभाग
मालवांचल विश्वविद्यालय
इन्दौर, म०प्र०

डा० ऋतु भारद्वाज
शोध निर्देशिका
संस्कृत विभाग
मालवांचल विश्वविद्यालय
इन्दौर, म०प्र०

सारांश

यज्ञ की परम्परा प्राचीनकाल से रही है। ऋषि वनों में रहते हुए प्रात: सायं दैनिक यज्ञ किया करते थे। पंच महायज्ञों का प्रचलन था। धार्मिक अनुष्ठान के समय वृक्षों में भगवान का वास मानकर पीपल, बरगद, आम, अशोक, बिल्व, पारिजात, आंवला आदि की पूजा की जाती थी। ऋषि–मुनि, यज्ञ को सफलता और सिद्धिकारक मानते थे और वायुमण्डल की शुद्धि का कारक भी मानते थे। यही कारण था कि उस समय लोग निरोग और दीर्घायु होते थे।

कुंजी शब्द– यज्ञ, पर्यावरण, अनुशीलन

प्रस्तावना

पर्यावरण से अभिप्राय हमारे चारों ओर फैले उस वातावरण एवं परिवेश से है, जिससे हम घिरे रहते हैं। प्रकृति में मौजूद समस्त जैविक और अजैविक घटक पर्यावरण की संरचना में सहायक हैं, अर्थात् भूमि, जल, वायु, वनस्पति, जन्तु, मानव और सूर्य प्रकाश पर्यावरण के घटक हैं। ब्रह्माण्ड में संभवत: पृथ्वी ही एकमात्र ऐसा खगोलीय पिंड है, जहां जीवन के अनुकूल प्राकृतिक दशाएं पाई जाती हैं, इसी कारण यहाँ जीवों का विकास संभव हो सका है। पृथ्वी पर जीवन की निरन्तरता बनी रहे, इसके लिए प्रकृति के घटकों का एक निश्चित अनुपात तथा संतुलित रहना जरूरी है, तभी हमारा वर्तमान और भविष्य सुरक्षित रह सकता है।

प्रकृति और मानव का सृष्टि के आरंभ से ही अन्योन्याश्रित संबंध रहा है और मानव के पृथ्वी पर आभिर्भाव के साथ ही आवश्यकताओं का भी सत्य उदय हुआ। आदि मानव का जीवन पूर्णत: प्रकृति पर निर्भर था। अत: मानव और प्रकृति में एक सामंजस्य था, किंतु आधुनिक युग में मानव की आवश्यकताएं चरम पर हैं, जिसकी पूर्ति के लिए मानव ने प्रकृति का निर्दयतापूर्वक दोहन शुरू कर दिया। परिणाम आप सबके सामने है– **'पर्यावरण प्रदूषण',** जो आधुनिकता की देन हैं। प्रदूषण के कारण ही पूरा ब्रह्माण्ड संकट में है।

हमारी प्राचीन धार्मिक परम्पराएं इतनी महत्वपूर्ण हैं कि समूचे जन–जीवन को सुख–समृद्धि प्रदान करने के साथ ही ये विज्ञान सम्मत भी हैं। उदाहरणस्वरूप यज्ञ को ही लें यज्ञ एक ठोस वैज्ञानिक प्रक्रिया है, जो हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। महर्षि दयानंद ने भी कहा था, 'यदि पर्यावरण की शुद्धि एवं सुखों की वृद्धि चाहते हो तो नित्य प्रात: सायं प्रत्येक घर में हवन–यज्ञ करो।'

'यज्ञ' एक व्यापक शब्द है और इसका रूप भी व्यापक है। श्रीमद्भगद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को कर्मयोग समझाते हुए दान, पुण्य, सेवा, उपकार, रक्षा आदि सत्कर्मों को यज्ञ की संज्ञा देते हैं। **'यज्ञ वै विष्णु'** अर्थात् यज्ञ

विष्णु का स्वरूप है और विष्णु व्यापक हैं। ज्ञान, ध्यान, आराधना और चिंतन यज्ञ हैं, सेवा भी यज्ञ है और देश सेवा सबसे बड़ा यज्ञ है।

यज्ञ की परम्परा प्राचीनकाल से रही है। ऋषि वनों में रहते हुए प्रात: सायं दैनिक यज्ञ किया करते थे। पंच महायज्ञों का प्रचलन था। धार्मिक अनुष्ठान के समय वृक्षों में भगवान का वास मानकर पीपल, बरगद, आम, अशोक, बिल्व, पारिजात, आंवला आदि की पूजा की जाती थी। ऋषि—मुनि, यज्ञ को सफलता और सिद्धिकारक मानते थे और वायुमंडल की शुद्धि का कारक भी मानते थे। यही कारण था कि उस समय लोग निरोग और दीर्घायु होते थे।

मध्यकाल में यज्ञ को विकृत तथा विलुप्त होते देख **महर्षि दयानंद** ने यज्ञ को ज्ञान, विज्ञान का कारक बनाकर उसे आध्यात्मिक मंच पर पुन: प्रतिष्ठित किया और कहा, **'एते पंच महायज्ञा मनुष्यैर्नित्यं कर्त्व्या:।'** यज्ञ का सम्बन्ध मन से है और शुभ संस्कार मन के साथ रहते हैं। इसीलिए मनु ने भी कहा है, **'ऋषि यज्ञं देव यज्ञं भूत यज्ञं च सर्वदा, नृयज्ञं, पितृयज्ञं च यथा शक्ति न हाययेत्।'** कहने का तात्पर्य यह कि सभी ने यज्ञ करने पर जोर दिया।

यज्ञ (अग्निहोत्र) ब्रह्माण्ड् के जड़—चेतन पदार्थों से जुड़ी वह पद्धति है जिसको आचरण में लाकर मनुष्य, जो सभी योनियों में श्रेष्ठ समझा जाता है, सुख बटोरता है और परोसता है। यज्ञ का उद्देश्य मनुष्य को असुरत्व और मनुष्यत्व से ऊपर उठाकर देवत्व को प्राप्त कराना है। प्रकृति अर्थात् पंच महाभूत तत्वों व समस्त प्राणी मात्र को स्वस्थ शुद्ध वातावरण देकर सुख—शान्ति देता है। जो विज्ञान यज्ञ की भावना से रहित है वह समाज को सुख—सुविधा तो दे सकता है किन्तु वह मानव को शान्ति, आनन्द और पवित्र वातावरण नहीं दे सकता। यज्ञ को वेद तथा वैदिक वाङ्मय में **'विश्वतोधार'** कहा गया है। वैदिक शास्त्रों की इस परिभाषा पर जितना ही विचार करे उतनी ही यह गहरी और यथार्थ दृष्टिगोचर होती है। यज्ञ का धूम्र जहां मनुष्यों के लिये उपकारी है वहीं पशु—पक्षी, वृक्ष इत्यादि जो मूक जगत् है उसके लिये भी उतना ही सहकारी है।

'यज्ञ' शब्द का प्रयोग होते ही जो सहज अर्थ समझ में आता है वह कि किसी उद्देश्य से किसी देवता के लिये मंत्रोच्चार के साथ हवन—कुण्ड की अग्नि में घी, सामग्री और समिधा की आहुति प्रदान करना। यह अर्थ सामान्य हवन—अग्निहोत्र—से लेकर अश्वमेध तक यज्ञों के लिए समझा जाता है। **'यज्ञ'** शब्द **'यज'** धातु से बना है, जिसका अर्थ है— देव—पूजा, संगतिकरण और दान। **'यज्ञ'** वैदिक संस्कृति का आधार स्तम्भ है।

विगत 35 वर्षों से प्रदूषण की भयंकरता से हमारी पृथ्वी का पर्यावरण अत्यधिक प्रदूषित तथा रोगग्रस्त होता जा रहा है जिससे केवल मनुष्य ही नहीं सम्पूर्ण चराचर जगत् पर संकट बढ़ रहा है। अनियंत्रित भोगवाद की प्रवृत्ति के कारण प्रकृति के लगातार दोहन से यह प्रदूषणरूपी जहर समस्त प्राणियों व प्रकृति को नष्ट कर रहा है।

पर्यावरण संरक्षण कैसे किया जायं?

- सर्वप्रथम तो पंचमहाभूत में पृथ्वी का अनुचित दोहन न किया जाये अर्थात् वृक्षादि न काटना, सोना—चांदी, कोयला आदि खनिज पदार्थों के लिये भूमि का क्षरण न करना, एक ही भूमि पर अदल—बदल कर फसल उगाना जिससे उसके पोषक तत्व नष्ट न हों, रासायनिक खाद का प्रयोग न करना, कीटनाशक दवाओं का प्रयोग कम करना, उद्योग—धंधों के आणविक परीक्षणों तथा प्राणियों की मलिनताओं को शोधित कर भूमि में डालना।

- गाय आदि पशुओं का गोबर—मूत्र, कृमिनाशक होता है और भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ता है, अत: गोपालन, पशुओं की रक्षा—आवश्यक है।
- जल में भी उक्त प्रदूषित तत्व डालने से वह हानिकारक हो जाता है तथा अनेक रोगों का प्रकोप बढ़ता है।
- अग्नि जीवन शक्ति को बढ़ाती है। पर्यावरण को संतुलित रखने व प्रदूषण रहित करने में अग्नि का स्थान सर्वोपरि है।
- यज्ञाग्नि के लाभों में यज्ञ—चिकित्सा सबसे अधिक लाभदायक है।
- शुद्ध जल और वायु अपने आप में रोगनाशक औषधि है, अत: ऋषियों ने शुद्ध—पुष्ट, जल—वायु के लिए प्रतिदिन हवन—यज्ञ का सिद्धान्त प्रतिपादित किया।
- मनुष्य प्रश्वास द्वारा, औद्योगीकरण के द्वारा, वृक्षादि को काटकर, पशु—पक्षी को मारकर, दूषित गैसों से वायु को प्रदूषित करता है। अत: उसका यह कर्तव्य है कि गाय के घी, सुगंधित औषधियुक्त सामग्री तथा लाभदायक समिधाओं से यज्ञ कर उसके धूम्र से वायु मण्डल को शुद्ध—पवित्र करें।
- ऊर्जा की खपत कम करें— ग्लोबल वार्मिंग के ग्रीनपीस के कार्यकर्ताओ ने ताप विद्युत उत्पादन से पर्यावरण को होने वाले नुकसान को मुद्दा बनाया और बिजली की बचत के लिए बताया कि सी. एफ. एल और ट्यूब लगाकर ऊर्जा की बचत और वातावरण की गर्मी (ताप) को कम किया जा सकता है। 100 वाट के बल्ब के बदले मात्र 16 वाट का लेम्प लगाकर उतनी ही रोशनी के साथ ही शीतलता भी पाई जा सकती है।
- कम दूरी के आवागमन के लिये पैदल चलें और लम्बी दूरी के लिये पब्लिक ट्रांसपोर्ट का उपयोग करें।
- ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएं। घरों के आसपास तुलसी, फूलों के पौधें और जगह न हो तो भी मकानों की दीवारों के साथ बेलें लगाएं।
- प्लास्टिक की थैलियों का प्रयोग न करें क्योंकि ये धरती पर प्रति वर्ष कई गुना संख्या से बढ़ती रहती हैं, नष्ट नहीं होतीं। यह सारा प्लास्टिक मिट्टी में सड़े—गले बिना ज्यों का त्यों बना रहता है, अत: ये थैलियां अंतत: प्राकृतिक आपदा का कारण बनती हैं। पर्यावरण पर इनके प्रभाव को महसूस करने के लिए चेन्नई और मुंबई की बाढ़ अध्ययन का सटीक उदाहरण हो सकती है और उनसे सबक सीखा जा सकता है। वेदों में भी कहा गया है कि अनुभव से बढ़कर महान शिक्षक और कोई नहीं होता।
- कचरे की मात्रा को कम करें और किसी एक स्थान पर ही गड्ढे में फेंकें।
- विकास की योजना बनाते समय वृक्षों को बचाने के विकल्प का उपयोग किया जाए।
- ट्रांसपोर्ट सिस्टम मजबूत हो, मेट्रो रेल जैसी सुविधाएं लोगों को मिलें और कुछ सड़कें ऐसी हों जहाँ कार आदि वाहन ले जाने की मनाही हो।

- जिस प्रकार बिजली, पानी, टेलीफोन की लाइनों के लिए जगह छोड़ी जाती है उसी तरह वृक्षों के लिये भी जरूरी स्थान छोड़ा जाए। आवासीय जरूरतें पूरी करने के लिये खेलों के मैदानों व आयोजनों के लिये, व्यावसायिक स्थान बढ़ाने के लिए बड़े—बड़े 25—50 वर्ष पुराने वृक्षों को काट दिया जाता है। प्रत्येक के बदले में 10 वृक्ष लगाने की योजना तो है लेकिन वे कहां लगते हैं? और यदि वहीं कहीं आसपास लगते भी हैं तो इतने पास—पास लगते हैं कि कुछ मर जाते हैं और कुछ पनप नहीं पाते। वे इतने छोटे रह जाते हैं कि 10—12 साल उन्हें परिपक्व होने में लग जाते हैं। तब तक शहर के प्रदूषण और बढ़े हुए तापमान को सोखने की क्षमता उतने अंतराल तक बहुत कम रहती है। बड़े पेड़ों के नहीं होने से बारिश का पानी ठहरकर जमीन के अन्दर नहीं जा पाता। इस कारण से भूजल स्तर में भी सतत गिरावट बनी रहती है।
- पटाखों से वायु और ध्वनि प्रदूषण बहुत बढ़ता है। ये दीपावली या किन्हीं त्यौहारों पर, शादियों में, नेताओं की जीत पर, क्रिकेट की जीत पर या और किसी कारण पर इतने पटाखे जलाए जाते हैं कि सारा वातावरण सल्फर डायऑक्साइड, कार्बन मोनाक्साईड, कार्बन डायऑक्साइड, सस्पेन्डेड पर्टीक्युलेट मॅटर (सीसा) जैसे घातक तत्वों से भर जाता है, जिनसे आंखों में जलन, दम घुटना, फेफड़ों में संक्रमण आदि रोग होने का खतरा रहता है। साथ ही उनकी भयंकर आवाज से ध्वनि प्रदूषण बढ़ता है और कान के पर्दों पर भी घातक असर पड़ता है। यह गैस खामोश हत्यारिन की तरह है जो मारने से पहले यह मसूस नहीं होने देती कि मौत कितनी निकट है। दिल्ली में एक बार एक परिवार वर्षा से बचने के लिए ए. सी. कार के कांच बंद करके बैठा रहा और इंजिन से निकलने वाली कार्बन मोनाक्साईड उन्हें लील गई। विषैली गैस के ऐसे कई उदाहरण हैं।
- साधारण धुएं की तुलना में पटाखों, सिगरेट आदि का और रासायनिक धुआं अधिक घातक होता है क्योंकि यह धरती के निकट ही नहीं होता बल्कि हमें चारों ओर से घेरे हुए भी होता है और श्वास द्वारा हमारे शरीर में जाता रहता है। इनके श्वास से— अस्थमा तथा एलर्जी वाले रोगियों को बहुत कष्ट होता है। पटाखों के धमाकों से होने वाले ध्वनि प्रदूषण से गर्भस्थ शिशुओं की श्रवण—शक्ति और क्षमता तक प्रभावित होती है और बच्चे व बूढ़े बहरेपन का शिकार होते हैं। मुम्बई में 40 वर्ष आयु के 52 प्रतिशत लोग आंशिक तौर पर बहेरपन का शिकार हैं और यहाँ का 20 वर्ष का आम निवासी सुनने की क्षमता की दृष्टि से अफ्रीका के मसाई निवासी 80 वर्षीय व्यक्ति के बराबर है।
- दीवाली खुशियों और उल्लास का प्रकाश पर्व है। इसे अवश्य मनाएं किन्तु दीप मालाओं के साथ मर्यादित रूप में तथा किसी एक खुले स्थान पर कम धुएं, कम आवाज वाले पटाखों के साथ जिससे वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण न हो। अन्य अवसरों पर भी पटाखों का प्रयोग करते समय हम उन मासूम गरीब बच्चों के बारे में सोंचें जिनसे पटाखों के कारखानों में काम करवाया जाता है और वह बारुद उनकी नन्हीं छाती में जाकर असमय ही उन्हें काल का ग्रास बना देता है। अनेक समस्याओं का विचार करते हुए पटाखों का प्रयोग खत्म हो जाना चाहिये।
- इस बढ़ते हुए प्रदूषण को रोकने का सर्वोत्तम और कारगर उपाय यज्ञ—हवन करना ही हैं। **'यज्ञ'** एक महाविज्ञान है

यज्ञ का प्रभाव

यज्ञ से मानव के भौतिक, आध्यात्मिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं व्यक्तिगत उद्देश्य पूर्ण होते हैं। यज्ञ किसी—न—किसी इच्छा की पूर्ति के लिए किया जाता है। **'स्वर्ग कामोयज्ञेत'** अर्थात स्वर्ग की कामना से यज्ञ करो। यज्ञ से जीवन में सुख, शांति और आनंद की प्राप्ति होती है। महाराज दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ करवाया तो चार पुत्रों की प्राप्ति हुई। अत: यज्ञ समस्त इच्छाओं को पूरा करने वाला है। हमारे पूर्वज भी कहते थे कि बिना यज्ञ—हवन का घर आर्य का घर नहीं होता।

अग्नि अमूल्य है जीवन का सम्बन्ध आरोग्यता से है और आरोग्यता का सम्बन्ध यज्ञ से। अनगिनत अज्ञात सूक्ष्म जीवाणु हमारे चारों तरफ वातावरण में और हमारे रोमकूपों, रक्त और जोड़ों में रहते हैं। हवन द्वारा इन सभी का नाश होता है। तपेदिक, चेचक, मलेरिया आदि का इलाज हवन से संभव है। जिस घर में प्रतिदिन हवन होता है, वह घर बीमारियों से बचा रहता है। मनु के अनुसार, **'यज्ञ—व्रतादि'** से मानव शरीर व आत्मा को ब्रह्म प्राप्ति के योग् बनाया जाता है। यज्ञ से ही तपने वाला सूर्य कल्याणकारी बनता है और यज्ञ से ही जीवनाधार पर्जन्य (बादल) कल्याणकारी बनकर बरसता है। **'यज्ञाद भवति पर्जन्यो यज्ञकर्म समुदभव:'** अत: यज्ञ में प्राणि—मात्र के सुखी होने की कामना निहित है।'

यज्ञ एवं शोध

यज्ञ अथवा अग्निहोत्र आज केवल धार्मिक कर्मकांड तक ही सीमित नहीं रह गया है। यह शोध का विषय भी बन गया है। **'अमेरिका'** में यज्ञ पर शोध हुए हैं और प्रायोगिक परीक्षणों से पाया गया है कि वृष्टि, जल एवं वायु की शुद्धि, पर्यावरण संतुलन एवं रोग निवारण में यज्ञ की अहम भूमिका है।

चेचक के टीके के आविष्कारक **डॉ. हैफकिन** का कथन है 'घी जलाने से रोग के कीटाणु मर जाते हैं।'

फ्रांस के वैज्ञानिक प्रो. ट्रिलबिर्ट कहते हैं, 'जली हुई शक्कर में वायु शुद्ध करने की बड़ी शक्ति हैं। इससे टी. बी. , चेचक, हैजा आदि बीमारियां तुरंत नष्ट हो जाती हैं।'

अंग्रेजी शासनकाल में **मद्रास के सेनिटरी कमिश्नर डॉ. कर्नल किंग आई.एम.एस.** ने कहा, 'घी और चावल में केसर मिलाकर अग्नि में जलाने से प्लेग से बचा जा सकता है।'

आज अत्यधिक धुम्रपान, अंधाधुंध पेट्रोलियम पदार्थों के प्रयोग से बढ़ता प्रदूषण तथा विषैली गैसें चिंता का विषय, जिसका प्रतिकार यज्ञ है।

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश ने भी कहा है, 'यज्ञ में बहुत स्वास्थ्यप्रद उपयोगी ओजोन तथा फारमेल्डिहाइड गैसें भी उत्पन्न होती हैं। ओजोन ऑक्सीजन से भी ज्यादा लाभकारी एवं स्वास्थ्यवर्द्धक है। यह ठोस रूप में प्राय: समुद्र के किनारे पाई जाती है, जिसे हम अपने घर में ही यज्ञ से पा सकते हैं।'

हमारे प्राचीन ऋषि—मुनियों ने वैज्ञानिक आधार पर शोध करके सामग्री व समिधाओं का चयन किया था। जैसे—बरगद, पीपल, आम, बिल्व, पलाश, शमी, गूलर, अशोक, पारिजात, आंवला व मौलश्री वृक्षों के समिधाओं का घी सहित यज्ञ—हवन में विधान किया था, जो आज विज्ञान सम्मत है, क्योंकि यज्ञ का उद्देश्य पंचभूतों की शुद्धि है, जो हमारे पर्यावरण का अंग हैं। यज्ञ का वैदिक उद्देश्य भी पर्यावरण शुद्धि एवं संतुलन है। यज्ञ—विज्ञान का नियम है कि जब कोई पदार्थ अग्नि में डाला जाता है तो अग्नि उस पदार्थ के स्थूल रूप को तोड़कर सूक्ष्म बना देती है। इसलिए यजुर्वेद में अग्नि को **'धूरसि'** कहा जाता है।

महर्षियों ने इसका अर्थ दिया है कि भौतिक अग्नि पदार्थों के सूक्ष्मातिसूक्ष्म होने पर उनकी क्रियाशीलता उतनी ही बढ़ जाती है। यह एक वैज्ञानिक सिद्धान्त है। जैसे अणु से सूक्ष्म परमाणु और परमाणु से सूक्ष्म इलेक्ट्रान होता है। अत: ये क्रमानुसार एक–दूसरे से ज्यादा क्रियाशील एवं गतिशील है। यज्ञ में यह सिद्धान्त एक साथ काम करते हैं। यज्ञ में डाल गई समिधा अग्नि द्वारा विघटति होकर सूक्ष्म बनती है, वहीं दूसरी तरफ वही सूक्ष्म पदार्थ अधिक क्रियाशील एवं प्रभावी होकर विस्तृत क्षेत्र को प्रभावित करते हैं।

एक चम्मच घी एक आदमी खाता है तो उसकी लाभ–हानि सिर्फ खाने वाले आदमी तक ही सीमित है, परन्तु यज्ञ कुण्ड में एक चम्मच घी अनेक व्यक्तियों को लाभ पहुँचाता है। जिस घर में हवन होता है, यज्ञाग्नि के प्रभाव से वहाँ की वायु गर्म होकर हल्की होकर फैलने लगती है और उस खाली स्थान में यज्ञ से उत्पन्न शुद्ध वायु वहाँ पहुँच जाती है। इसमें विसरणशीलता का वैज्ञानिक नियम काम करता है। इसलिए हम देखते हैं कि किसी पर या कोई स्थान, जहाँ यज्ञ हुआ रहता है, वहां कई दिनों तक समिधा की खुश्बू विद्यमान रहती है। प्रदूषण आज की विकट समस्या है। इसका कारण एक तो हमारी भोगवती प्रवृत्ति और दूसरा प्राकृतिक संसाधनों का दोहन भी है। आज का बढ़ता तापमान, औद्योगीकरण, वृक्षों की कटाई, पॉलीथीन का उपयोग, जल, वायु, मृदा प्रदूषण चरमावस्था में है, जिसके कारण प्राणियों की रक्षा के लिए संरचित हमारे रक्षा कवच, ओजोन परत में छेद होने लगा है।

उद्योगों, कल–कारखानों से गन्दगी निकलकर पृथ्वी को दूषित कर रहे हैं बेतरतीब वाहनों से निकलता धुआं, अर्थात कार्बन मोनो–ऑक्साइड गैस से आँखों में जनल, सिर दर्द, अस्थमा, टी.बी. आदि से लोग परेशान हैं। ऐसा लगता है सम्पूर्ण जैवमण्डल विनष्ट हो रहा है। **'ओ पूर्णत: द: पूर्णमिदं'** को आधुनिक स्वार्थी, भोगलिप्सा में लिप्त मानव अनसुना करके अपने आपकों ही मारने पर तुला है। ओजोन परत में हुए छेद से सूर्य की प्रचंड गर्मी, विध्वंसकारी पराबैंगनी किरणों के रूप में चर्म रोग, कैंसर, आंखों से अंधा होना आदि का संवाहक बन गई है। ऐसे में इस समस्या के समाधान हेतु प्रयासों के साथ क्या हम एक छोटा–सा प्रयास **'यज्ञ'** के रूप में नहीं कर सकते?

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1- अग्रवाल, वासुदेव (1963) 'इण्डिया एज नोन टू पाणिनी– ए स्टडी ऑफ द कल्चरल मैटीरियल इन दा अष्टाध्यायी', पृथ्वी प्रकाशन, नई दिल्ली।

2- ज्ञानश्रुति श्रीविद्यानन्द (2006) 'यज्ञ ए कॉम्प्रीहेन्सिव सर्वे' योगा पब्लिकेशन ट्रस्ट, मुंगेर, बिहार, इण्डिया।

3- कृष्णानन्द स्वामी (2010) 'ए शॉर्ट हिस्ट्री ऑफ रिलीजस एण्ड फिलॉसोफिक थॉट इन इण्डिया' डिवाइन लाइफ सोसाइटी, ऋषिकेश।

4- निगल, एस०जी० (1986) 'एक्सियोलॉजिकल एप्रोच टू दा वेदाज' नॉर्दन बुक सेण्टर, न्यू देहली।

5- प्रसून श्रीकान्त (2010) 'इण्डियन स्क्रिप्चर्स' पुस्तक महल, आगरा।

6- वेदानन्द स्वामी (1993) 'ओम हिन्दुत्वम्' डेली रिलीजस राइट्स ऑफ द हिन्दूज, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।